



विवाह मिलान की पूरी रिपोर्ट

वर-वधू दोनों की कुंडली आमने-सामने, आठों कूट का अलग-अलग विचार, दोष का परिहार
व साफ़ राय

श्री अभय शर्मा व रिया वर्मा (काल्पनिक) जी हेतु व्यक्तिगत रिपोर्ट

नाम	अभय शर्मा व रिया वर्मा (काल्पनिक)
जन्म तिथि व समय	12 मार्च 1991 • 07:45
जन्म स्थान	जयपुर
लग्न • राशि • नक्षत्र	मीन • मकर • उत्तराषाढ़ा
वर्तमान दशा	राहु महादशा (2009–2027)
रिपोर्ट तिथि	24 सितम्बर 2026 • प्रातः 8:02

॥ पारस वाणी ॥

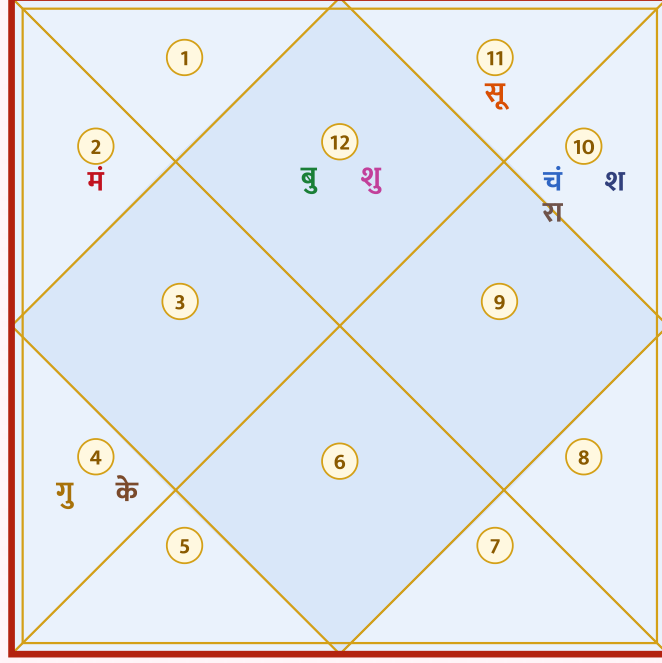
parasvani • वैदिक ज्ञान, आधुनिक तकनीक

यह रिपोर्ट खगोलीय Swiss Ephemeris (लाहिरी अयनांश) गणना पर आधारित है



जन्म कुंडली — ग्रह स्थिति एवं प्रभाव

कुंडली परिचय



जन्म-कुंडली (उत्तर भारतीय पद्धति) · लाहिरी अयनांश

ग्रह	राशि	भाव	क्षेत्र-प्रभाव
सूर्य	कुम्भ	12	आत्मबल व प्रतिष्ठा — व्यय व अध्यात्म
चंद्र	मकर	11	मन व भावनाएँ — लाभ व आय
मंगल	वृषभ	3	ऊर्जा व साहस — पराक्रम व संचार
बुध	मीन	1	बुद्धि व व्यापार — व्यक्तित्व व स्वास्थ्य
गुरु (वक्री)	कर्क	5	ज्ञान व भाग्य — बुद्धि व संतान
शुक्र	मीन	1	सुख व कला — व्यक्तित्व व स्वास्थ्य
शनि	मकर	11	कर्म व अनुशासन — लाभ व आय
राहु (वक्री)	मकर	11	महत्वाकांक्षा व नवाचार — लाभ व आय
केतु (वक्री)	कर्क	5	अध्यात्म व मोक्ष — बुद्धि व संतान



वर-वधू परिचय — दोनों की कुंडली आमने-सामने

अ ध्या य 1

वर-वधू परिचय — दोनों की कुंडली आमने-सामने

अभय शर्मा और रिया वर्मा — दो अलग शहरों, दो अलग राशियों और दो अलग स्वभावों का यह मेल ज्योतिष की दृष्टि से जितना दिलचस्प है, उतना ही संतुलित भी। एक की नींव अनुभव और गहराई से बनी है, दूसरे की ऊर्जा और उत्साह से — और यही दोनों की जोड़ी को पूरा करता है।

अभय शर्मा — मीन लग्न, मकर चंद्र, उत्तराषाढ़ा नक्षत्र

अभय जी का लग्न मीन है — यानी गुरु इनका लग्नेश है। मीन लग्न के जातक स्वभाव से संवेदनशील, कल्पनाशील और भावुक होते हैं। इनके भीतर एक गहरी आध्यात्मिक धारा बहती है, चाहे वे इसे रोजमर्रा की जिंदगी में दिखाएँ या न दिखाएँ।

इनकी कुंडली की सबसे बड़ी ताकत है — **लग्न में उच्च का शुक्र**। शुक्र मीन राशि में उच्च होते हैं और यहाँ ये मालव्य योग (पंचमहापुरुष) भी बना रहे हैं। इसका सीधा अर्थ है कि अभय जी में सौंदर्यबोध, कलात्मकता और व्यक्तित्व की एक खास चमक है — जो लोगों को स्वाभाविक रूप से अपनी ओर खींचती है। घर-परिवार, रिश्तों में सुख और भौतिक सुविधाएँ इनके जीवन में आती हैं।

पाँचवें भाव में **उच्च के वक्री गुरु** हैं — जो गजकेसरी योग भी बनाते हैं। बुद्धि तीव्र है, सोच गहरी है, और जहाँ दूसरे ऊपर-ऊपर देखते हैं, अभय जी भीतर तक जाते हैं। हालाँकि गुरु वक्री होने और अवस्था में वृद्ध होने से यह बुद्धि कभी-कभी उन्हें अत्यधिक विश्लेषणात्मक बना देती है — फ़ैसले लेने में समय लगता है।

ग्यारहवें भाव में शनि स्वराशि मकर में हैं — लाभ व दीर्घकालीन लक्ष्यों में स्थिरता देते हैं। चंद्र भी मकर में है, जो बताता है कि मन व्यावहारिक है, भावनाओं को वे दिखाते कम और संभालते अधिक हैं। उत्तराषाढ़ा नक्षत्र के जातक एक बार जो ठान लें, उसे पूरा करके ही छोड़ते हैं — ये जीवन में जो भी लक्ष्य तय करते हैं, उसमें टिके रहते हैं।

संक्षेप में: अभय जी शांत बाहरी व्यक्तित्व के पीछे गहरी भावनाओं वाले व्यक्ति हैं — जिम्मेदार, कलाप्रिय, दीर्घदृष्टि।

रिया वर्मा — मिथुन लग्न, तुला चंद्र, चित्रा नक्षत्र

रिया जी का लग्न मिथुन है — बुध इनका लग्नेश। मिथुन लग्न के जातक चंचल, वाकपटु, सामाजिक और बौद्धिक रूप से जीवंत होते हैं।

बातचीत में माहिर, नई चीज़ें सीखने की इच्छा हमेशा बनी रहती है।

पाँचवें भाव में सूर्य, चंद्र, गुरु, शुक्र (वक्री) और राहु — यह ग्रह-समूह असाधारण है। **गुरु और चंद्र का यह योग भावनात्मक गहराई और सामाजिक बुद्धि दोनों देता है।** रिया जी में एक विशेष आकर्षण है — वे जिस भी समूह में हों, उन्हें नोटिस किया जाता है। शुक्र वक्री होने से इनकी पसंद, रुचियाँ और प्रेम-भावना अपने ढंग की होती है — दूसरों की तरह नहीं, बल्कि अपनी शर्तों पर।

चित्रा नक्षत्र मंगल के स्वामित्व में है — इसलिए रिया जी में एक अंदरूनी तेज़ है, एक आत्मविश्वास जो शुरुआत में शायद न दिखे पर समय के साथ प्रकट होता है। **मंगल दूसरे भाव (कर्क) में है — मांगलिक योग बनता है।** इसका सरल अर्थ यह है कि रिश्तों में इनकी अपेक्षाएँ स्पष्ट हैं और वे चाहती हैं कि जीवनसाथी उनके बराबर खड़ा हो।

नवें भाव में वक्री शनि — भाग्य और धर्म के प्रति एक गंभीर सोच। ये छोटी-छोटी बातों में नहीं, बड़े अर्थ खोजती हैं।

संक्षेप में: रिया जी ऊर्जावान, सामाजिक और भावनात्मक रूप से समृद्ध हैं — जो मन में है वह खुलकर कहती हैं, और जो चाहती हैं उसके लिए मेहनत करती हैं।

दोनों आमने-सामने — कहाँ मेल, कहाँ सीखना

| पहलू | अभय शर्मा | रिया वर्मा |
|-----|-----|
| लग्न | मीन (गुरु) | मिथुन (बुध) |
| चंद्र | मकर — शांत, व्यावहारिक | तुला — संतुलन-प्रेमी, सामाजिक |
| स्वभाव | अंतर्मुखी गहराई | बहिर्मुखी ऊर्जा |
| शक्ति | स्थिरता, कला, भावनात्मक गहराई | वाक्पटुता, सामाजिकता, उत्साह |
| सीखने का क्षेत्र | भावनाएँ खुलकर कहना | निर्णयों में धैर्य रखना |

अभय जी की मकर चंद्र और रिया जी की तुला चंद्र — दोनों शनि से जुड़ी राशियाँ हैं (तुला में शनि उच्च होते हैं)। इसका अर्थ है कि **दोनों के भीतर एक अनुशासन और ज़िम्मेदारी का भाव है** — भले ही दोनों उसे अलग-अलग तरह से व्यक्त करते हैं।

मुख्य बातें

- **अभय जी** — मीन लग्न, उच्च शुक्र, उच्च गुरु: संवेदनशील, कलाप्रिय, स्थिर; मालव्य व गजकेसरी योग से व्यक्तित्व में विशेष चमक।
- **रिया जी** — मिथुन लग्न, पाँचवें भाव में शक्तिशाली ग्रह-समूह: सामाजिक, ऊर्जावान, भावनात्मक रूप से समृद्ध।
- दोनों की **चंद्र राशि शनि-प्रभावित** — ज़िम्मेदारी का भाव दोनों में साझा है, यह रिश्ते की एक मज़बूत नींव है।
- अभय जी की **शांत गहराई** और रिया जी की **जीवंत ऊर्जा** एक-दूसरे की पूरक हैं — एक रिश्ते में यही संतुलन टिकाव देता है।
- दोनों जहाँ एक-दूसरे से अलग हैं, **वहीं सीखने का सबसे बड़ा अवसर है** — यह अंतर कमजोरी नहीं, इस जोड़ी की खूबी है।

क्रमशो रुचको भद्रो हंसो मालव्य एव च ।

शशश्चैते बुधैः सर्वैर्महान्तः पुरुषाः स्मृताः ॥

रुचक, भद्र, हंस, मालव्य और शश — इन पाँच योगों में जन्मे व्यक्ति को विद्वान लोग "महापुरुष" कहते हैं।

— बृहत् पाराशर होरा शास्त्र, अध्याय ७५



कुल मिलान — सीधी बात, सादे शब्दों में

अ ध्या य 2

कुल मिलान — सीधी बात, सादे शब्दों में

अभय जी और रिया जी का मिलान **36 में से 25.5 अंकों** का है — यह बहुत अच्छा मिलान है। परंपरा में 18 से ऊपर को स्वीकार्य और 24 से ऊपर को उत्तम माना जाता है। यह जोड़ी उस श्रेणी में आती है।

आपसी तालमेल — मन और दिल दोनों

ग्रह मैत्री को पूरे पाँच में से पाँच अंक मिले हैं — यह सबसे बड़ी बात है। अभय जी की चंद्र राशि मकर है जिसके स्वामी शनि हैं, और रिया जी की चंद्र राशि तुला है जिसके स्वामी शुक्र। शनि और शुक्र परस्पर मित्र ग्रह हैं — इसका अर्थ यह है कि दोनों का स्वभाव, सोचने का तरीका और जीवन के प्रति नजरिया एक-दूसरे को समझेगा। जहाँ बातचीत में फ़र्क आए, वहाँ भी दोनों एक-दूसरे की बात सुन सकते हैं — यही हर रिश्ते की नींव है।

भकूट को पूरे सात में से सात अंक मिले हैं। वर-वधू की राशियों का संबंध 4/10 का है — यह संबंध पारिवारिक सुख, आपसी प्रेम और घर की स्थिरता देने वाला माना गया है। घर बनाने और उसे टिकाए रखने में यह योग बहुत सहायक होता है।

नाड़ी और भकूट — कोई दोष नहीं

बहुत-से परिवार नाड़ी दोष और भकूट दोष को लेकर चिंतित रहते हैं। यहाँ **दोनों में से कोई दोष नहीं है** — अभय जी की नाड़ी अंत्य है और

रिया जी की मध्य, जो अलग-अलग हैं, इसलिए नाड़ी दोष बनता ही नहीं। भकूट संबंध 4/10 का है जो शुभ श्रेणी में है।

जहाँ थोड़ा ध्यान देना होगा

गण मिलान में शून्य अंक आए हैं — अभय जी मनुष्य गण के हैं, रिया जी राक्षस गण की। इसका सीधा अर्थ यह नहीं कि स्वभाव बिल्कुल विपरीत है, बल्कि इसका अर्थ है कि जीवन की छोटी-छोटी आदतों में — जैसे समय की पाबंदी, घर के नियम, या किसी बात पर जोर देने का तरीका — कभी-कभी मतभेद उठ सकता है। इसे समझकर चलें तो यह कोई बड़ी बात नहीं।

योनि मिलान में दो अंक मिले — नकुल और व्याघ्र का संयोग औसत है। इससे केवल यह समझें कि दोनों को एक-दूसरे के साथ समय और धैर्य देना होगा।

मुख्य बातें

- **25.5 / 36 — उत्तम मिलान;** परंपरा की हर कसौटी पर यह जोड़ी खरी उतरती है।
- ग्रह मैत्री और भकूट — **दोनों पूर्ण अंकों के साथ;** मन और घर दोनों की मजबूती का संकेत।
- नाड़ी और भकूट — **कोई दोष नहीं;** इन दोनों की चिंता छोड़ सकते हैं।
- गण मिलान में अंतर है — **समझ और बातचीत से** यह सहज हो जाता है।
- यह मिलान **आगे बढ़ने के लिए अनुकूल है** — अभय जी और रिया जी को शुभकामनाएँ।



आठों कूट — हर एक का आम ज़िंदगी में मतलब

अ ध्या य 3

आठों कूट — हर एक का आम ज़िंदगी में मतलब

अभय जी और रिया जी का कुल मिलान **25.5 / 36** है — यह परंपरा में "उत्तम" माना जाता है। आठों कूटों में से कुछ में पूरे अंक मिले हैं, कुछ में थोड़ी सावधानी की बात है — नीचे हर एक को आम ज़िंदगी की भाषा में समझाया गया है।

वर्ण — 1/1 : सोचने का तरीका

वर्ण का सम्बंध जाति से नहीं, बल्कि दोनों के **मन की गहराई और सोचने के ढंग** से है। अभय जी का वर्ण वैश्य और रिया जी का शूद्र — दोनों में थोड़ा अंतर है। व्यावहारिक जीवन में इसका अर्थ यह हो सकता है कि अभय जी किसी बात को थोड़ा ज़्यादा सोच-विचारकर, तौल-

मोलकर करते हैं; रिया जी सहज, ज़मीन से जुड़ी और काम की बात पर ध्यान देने वाली हैं। **यह अंतर टकराव नहीं, बल्कि पूरकता बन सकता है** — बशर्ते दोनों एक-दूसरे के तरीके को समझने की कोशिश करें। यहाँ एक में से एक अंक मिला है।

वश्य — 1/2 : आपसी खिंचाव व साथ रहने की इच्छा

वश्य बताता है कि दोनों के बीच **स्वाभाविक आकर्षण और एक-दूसरे को अपना मानने की भावना** कितनी है। अभय जी वश्य चतुष्पद और रिया जी मानव — दोनों में आधा मिलान है, पूरा नहीं। इसका सीधा अर्थ: शुरुआत में एक-दूसरे के प्रति गहरा खिंचाव रहेगा, पर जैसे-जैसे रोज़मर्रा की व्यस्तता बढ़ेगी, थोड़ा प्रयास करना होगा कि यह नज़दीकी बनी रहे — **साथ में समय बिताना, छोटी-छोटी बातें साझा करना इसी का उपाय है।**

तारा — 1.5/3 : स्वास्थ्य व जीवन का सामंजस्य

तारा कूट दोनों के जन्म-नक्षत्रों की दूरी से निकलता है और **स्वास्थ्य, आयु व भाग्य का संकेत देता है।** यहाँ डेढ़ अंक मिले हैं — यानी मिलान मध्यम है। यह कोई बड़ी चिंता की बात नहीं, पर ध्यान रखने की बात ज़रूर है। **घर में नियमित दिनचर्या, सेहत का ख़्याल और तनाव में एक-दूसरे का साथ देना** — यही इस कूट की कमी को पूरा करता है।

योनि — 2/4 : शारीरिक व भावनात्मक तालमेल

योनि कूट से **दांपत्य के भीतर शारीरिक अनुकूलता और भावनात्मक निकटता** का पता चलता है। अभय जी की योनि नकुल (नेवला) और रिया जी की व्याघ्र (बाघ) — ये स्वाभाविक रूप से अलग प्रकृति के हैं। इसीलिए यहाँ चार में से दो अंक मिले। व्यावहारिक रूप से इसका अर्थ है कि कभी-कभी दोनों की ऊर्जा और मिज़ाज एक जैसे नहीं होंगे — **एक थका होगा जब दूसरे को बात करने की ज़रूरत होगी।** इसके लिए एक-दूसरे की भावनाओं को बिना दबाव दिए समझना सबसे बड़ा उपाय है।

ग्रह मैत्री — 5/5 : दिलों का असली मेल

यह कूट सबसे महत्वपूर्ण में से एक है। अभय जी की चंद्र राशि मकर (स्वामी शनि) और रिया जी की तुला (स्वामी शुक्र) — **शनि और शुक्र मित्र ग्रह हैं।** इसीलिए यहाँ पाँच में से पाँचों अंक मिले। इसका सीधा मतलब: **दोनों का मन एक-दूसरे को स्वाभाविक रूप से पसंद करता है।** बड़े फ़ैसलों में, मुश्किल वक़्त में, या जब बाहर की दुनिया कठिन हो — इन दोनों का मन एक-दूसरे के साथ सहज रहेगा। यह जोड़ी की सबसे बड़ी ताक़त है।

गण — 0/6 : स्वभाव व जीवन-शैली का मेल

गण कूट दोनों के **मूल स्वभाव और जीवन देखने के नज़रिए** को बताता है। अभय जी मनुष्य गण और रिया जी राक्षस गण — परंपरा में इन्हें विपरीत माना गया है, इसीलिए यहाँ शून्य अंक हैं। पर यह इतना भयावह नहीं जितना लगता है। राक्षस गण का अर्थ है **स्वतंत्र सोच, बेबाकी और अपने तरीके से जीने की इच्छा** — जो आज के समय में एक गुण भी है। **दोनों को एक-दूसरे की स्वतंत्रता का सम्मान करना होगा**; ज़बरदस्ती एक ही साँचे में ढालने की कोशिश न हो तो यह अंतर रिश्ते को रोचक बनाता है, तोड़ता नहीं। ग्रह मैत्री के पाँच अंक इस कमी को काफ़ी हद तक संतुलित करते हैं।

भकूट — 7/7 : पारिवारिक सुख व उन्नति

भकूट कूट दोनों की **राशियों के आपसी सम्बंध** से बनता है — अभय जी मकर और रिया जी तुला, यानी 4/10 का सम्बंध। **यह अत्यंत शुभ माना गया है**। इसका अर्थ है कि इस जोड़ी के घर में **धन, उन्नति और पारिवारिक सुख** का वातावरण बनेगा। यहाँ कोई दोष नहीं है और सातों अंक मिले हैं — यह बड़ी राहत की बात है।

नाड़ी — 8/8 : स्वास्थ्य व संतान

नाड़ी कूट के आठ अंक सबसे अधिक होते हैं और **स्वास्थ्य व संतान** से जुड़े माने जाते हैं। अभय जी अंत्य नाड़ी और रिया जी मध्य नाड़ी — **दोनों की नाड़ी अलग-अलग है, इसलिए यहाँ कोई दोष नहीं है** और पूरे आठ अंक मिले हैं। यह मिलान का सबसे शुभ पहलू है।

मुख्य बातें

- **25.5/36 — उत्तम मिलान**; परंपरा में 18 से ऊपर को स्वीकार्य माना जाता है, यह उससे काफ़ी आगे है।
- **ग्रह मैत्री (5/5) और भकूट (7/7) — दोनों पूरे मिले**; मन का मेल और घर की उन्नति — यही रिश्ते की नींव है।
- **नाड़ी दोष नहीं** — यह सबसे बड़ी राहत; स्वास्थ्य व संतान के विषय में कोई विशेष चिंता नहीं।
- गण में अंतर है — इसके लिए एक-दूसरे की स्वतंत्र सोच का सम्मान करना ही सबसे अच्छा उपाय रहेगा।
- योनि और वश्य में थोड़ी सावधानी — पर ये दोनों **रोज़ के छोटे-छोटे प्रयास से आसानी से सँभल जाते हैं**।



दोष व परिहार — घबराने की बात है या नहीं

अध्याय 4

दोष व परिहार — घबराने की बात है या नहीं

अभय जी और रिया जी की जोड़ी में **कुल गुण 25.5 / 36 हैं** — जो परंपरा की दृष्टि से उत्तम मिलान की श्रेणी में आता है। जो दोष दिखते हैं, उनके परिहार भी गणना में ही मिल रहे हैं — इसलिए परिवार निश्चित रहें।

मंगल दोष — सावधानी, भय नहीं

रिया जी की कुंडली में मंगल दूसरे भाव में हैं, इसलिए उन्हें मांगलिक माना गया है। अभय जी के तीसरे भाव में मंगल हैं — परंपरा में तीसरा, छठा, ग्यारहवाँ भाव मांगलिक नहीं माना जाता, इसलिए **अभय जी मांगलिक नहीं हैं**।

पर यहाँ एक महत्वपूर्ण परिहार देखिए — अभय जी के लग्न भाव में उच्च का शुक्र विराजमान है। शुक्र विवाह का कारक ग्रह है और मीन राशि में उच्च होकर वर्गोत्तम भी हैं — यानी नवांश में भी मीन राशि में। **इतना बलवान शुक्र मंगल दोष का प्रभाव काफी कम कर देता है**। साथ ही, दोनों के सप्तम भाव खाली हैं — कोई पाप ग्रह वहाँ सीधा नहीं बैठा। यह अपने आप में बड़ी राहत की बात है।

गण दोष — रोज़मर्रा की असली परीक्षा

गण मिलान में अंक शून्य (0/6) आया है — अभय जी मनुष्य गण और रिया जी राक्षस गण की हैं। यह सबसे अधिक ध्यान देने वाला बिंदु है। **राक्षस गण की स्त्रियाँ स्वभाव से स्वतंत्र, दृढ़ और अपने मन की होती हैं** — यह कोई कमी नहीं, पर इसका अर्थ है कि घर में निर्णय लेने और रोज़मर्रा के तरीकों पर दोनों को धैर्य से बात करने की आदत डालनी होगी।

परिहार यह है कि **ग्रह मैत्री में पूरे 5 में से 5 अंक मिले हैं** — अभय जी का चंद्र मकर (शनि) और रिया जी का चंद्र तुला (शुक्र) में है। शनि और शुक्र आपस में मित्र हैं, इसलिए दोनों के मन का गहरा तालमेल स्वाभाविक है। जब मन मिलते हैं, तो स्वभाव के छोटे-छोटे अंतर समय के साथ घुल जाते हैं।

वश्य व योनि — थोड़ा प्रयास, पर प्रेम से संभव

वश्य में 2 में से 1 अंक और योनि में 4 में से 2 अंक मिले — दोनों ठीक-ठाक हैं, पर पूरे नहीं। वश्य (चतुष्पद व मानव) और योनि (नकुल व व्याघ्र) का यह अंतर बताता है कि **दोनों के स्वाभाविक रहन-सहन और पसंद-नापसंद में कुछ अंतर रहेगा** — जैसे एक पहाड़ पर टहलना पसंद करे और दूसरा घर में बैठना। यह कोई बड़ी समस्या नहीं, बस एक-दूसरे की आदतों को जगह देने की ज़रूरत है।

मुख्य बातें

- **नाड़ी व भकूट — दोनों में कोई दोष नहीं।** यह सबसे बड़ी राहत है क्योंकि ये दो दोष परंपरा में सबसे गंभीर माने जाते हैं।
- मंगल दोष है, पर अभय जी के उच्च-वर्गोत्तम शुक्र से उसका प्रभाव काफ़ी घट जाता है।
- गण दोष है, पर ग्रह मैत्री पूरी (5/5) होने से मानसिक जुड़ाव मज़बूत रहेगा — यही असली नींव है।
- **कुल 25.5 अंक उत्तम मिलान के हैं।** घबराने की कोई बात नहीं — बस एक-दूसरे को समझने का धैर्य रखें।
- उपाय: दोनों मिलकर हर मंगलवार हनुमान जी को सिंदूर व चोला चढ़ाएँ और साथ बैठकर आरती करें — यह मंगल दोष की शांति के लिए और दाम्पत्य में एकता के लिए, दोनों के लिए काम का है।



दाम्पत्य जीवन — स्वभाव, सुख, संतान, किस बात का ध्यान

अ ध्या य 5

दाम्पत्य जीवन — स्वभाव, सुख, संतान, किस बात का ध्यान

अभय जी और रिया जी की यह जोड़ी स्वभाव में एक-दूसरे से अलग ज़रूर है, पर यही अलगाव इस रिश्ते को पूरा करता है — जहाँ एक में शांति है, दूसरे में ऊर्जा; जहाँ एक सोचता है, दूसरा महसूस करता है। दोनों की कुंडलियाँ मिलकर एक संतुलित और टिकाऊ दाम्पत्य का चित्र बनाती हैं।

स्वभाव का मेल — अलग धाराएँ, एक दिशा

अभय जी का लग्न मीन और चंद्र मकर में है। मीन लग्न व्यक्ति को भावुक, संवेदनशील और भीतर से बहुत गहरा बनाता है — वे अपनी भावनाएँ कम बोलते हैं, पर महसूस बहुत करते हैं। मकर का चंद्र मन को व्यावहारिक और धैर्यवान रखता है — ये भावनाओं को तुरंत नहीं उड़ेलते, बल्कि पहले तोलते हैं। लग्न में उच्च का शुक्र बताता है कि अभय जी के भीतर सुंदरता, कला और प्रेम की गहरी समझ है — वे जीवनसाथी को बहुत आदर देते हैं, पर अपनी जगह माँगते भी हैं।

रिया जी का लग्न मिथुन और चंद्र तुला में है। मिथुन लग्न बुद्धि, वाणी और चंचलता का प्रतीक है — वे बोलने में निपुण, विचारों में तेज़ और संपर्क में खुली हैं। तुला का चंद्र मन को न्यायप्रिय, संबंध-प्रेमी और सौंदर्य-बोधी बनाता है। रिया जी के पंचम भाव में सूर्य, चंद्र, गुरु, शुक्र और राहु — पाँच ग्रहों का जमावड़ा है। यह उन्हें भावों में तीव्र, प्रेम में पूर्ण और अपेक्षाओं में गहरी बनाता है।

दोनों का ग्रह-मैत्री कूट पूरे पाँच में से पाँच अंक पाता है — अभय जी के चंद्र-स्वामी शनि और रिया जी के चंद्र-स्वामी शुक्र परस्पर मित्र हैं। यह मानसिक तालमेल का सबसे पक्का आधार है।

दाम्पत्य सुख — कहाँ मिठास है, कहाँ सँभलना है

अभय जी के सप्तम भाव (विवाह का भाव) के स्वामी बुध हैं, जो लग्न में नीच अवस्था में हैं। इसका सीधा अर्थ यह नहीं कि विवाह में कठिनाई होगी — पर यह जरूर बताता है कि **संवाद में थोड़ी सावधानी चाहिए**। अभय जी बहुत सोचकर बोलते हैं और कभी-कभी जो कहना है वह कह नहीं पाते — रिया जी को यह चुप्पी दूरी लग सकती है जबकि अभय जी के लिए वह विचार-मंथन है। **इस एक बात पर ध्यान देने से बहुत से मनमुटाव टल सकते हैं।**

रिया जी के सप्तम भाव के स्वामी गुरु हैं जो उनके पंचम भाव में उसी समूह के साथ हैं। नवांश (D9) में देखें तो अभय जी का शुक्र मीन राशि में है — वर्गोत्तम, यानी D1 और D9 दोनों में मीन — यह असाधारण स्थिति है। **शुक्र का वर्गोत्तम होना बताता है कि अभय जी के दाम्पत्य जीवन में सुख, स्नेह और प्रेम की जड़ें बहुत गहरी हैं।** यह शुक्र गोचर में अभी तुला में है और अक्टूबर 2026 तक अनुकूल रहेगा — यह समय आपसी समझ बढ़ाने के लिए बहुत अच्छा है।

गण कूट में वर मनुष्य और वधू राक्षस गण हैं — अंक शून्य मिले हैं। इसका अर्थ है कि दोनों के स्वभाव में कभी-कभी टकराव आ सकता है। **अभय जी थोड़े अधिक संयमी हैं, रिया जी थोड़ी अधिक तीव्र** — जब रिया जी की भावनाएँ उफान पर हों, अभय जी यदि उस समय तर्क करने लगें तो बात बिगड़ सकती है। इसका हल सरल है — उस समय पहले सुनना, बाद में समझाना।

संतान — आशा व समय

अभय जी के पंचम भाव में उच्च का वक्री गुरु विराजमान है — **गजकेसरी योग और गुरु-चांडाल योग दोनों यहाँ एक साथ बनते हैं।** गुरु उच्च का है — संतान की संभावना शुभ है — पर केतु की युति के कारण निर्णय में थोड़ा विलंब या उतार-चढ़ाव आ सकता है। वक्री गुरु का फल देर से परिपक्व होता है।

पंचम भाव के स्वामी चंद्र ग्यारहवें भाव में शनि और राहु के साथ हैं — यह संयोजन बताता है कि संतान-सुख के लिए **जून 2027 के बाद का समय** — जब गुरु महादशा आरंभ होगी — अधिक अनुकूल रहेगा। उस समय अभय जी 36 वर्ष के होंगे। रिया जी की दशा में गुरु-शनि अंतर्दशा भी उसी दौर में आएगी। दोनों की दशाएँ मिलकर उस समय को संतान के लिए उपयुक्त इशारा करती हैं।

किस बात का ध्यान रखें

- **अभय जी मन की बात खुलकर कहें** — चुप्पी को रिया जी अपनापन न मिलने जैसा महसूस कर सकती हैं। सप्तमेश बुध का नीच होना यही कहता है।

- **रिया जी धैर्य रखें** — अभय जी भावनाओं को समय लेकर व्यक्त करते हैं, जल्दी में नहीं। यह उनकी कमजोरी नहीं, उनका स्वभाव है।
- गण-दोष को हल्का करने के लिए दोनों साथ में **हर सोमवार शिव-पार्वती की पूजा करें** — यह दाम्पत्य को एक सूत्र में पिरोता है।
- मंगल दोष (रिया जी) के लिए **विवाह से पहले कुंभ-विवाह या विष्णु-पूजा** का सादा अनुष्ठान पर्याप्त परिहार है — कोई बड़ा आयोजन नहीं।

मुख्य बातें

- **ग्रह-मैत्री पाँच में पाँच** — मानसिक तालमेल इस जोड़ी की सबसे बड़ी ताकत है।
- अभय जी का **वर्गोत्तम शुक्र** दाम्पत्य में गहरे प्रेम व स्थायित्व का संकेत है।
- **संवाद की खुलापन** — यही एक काम सबसे ज़्यादा ज़रूरी है, दोनों की ओर से।
- संतान के लिए **जून 2027 के बाद** का समय अधिक अनुकूल — गुरु महादशा का आरंभ।
- गण-भेद को **साझा साधना और आपसी आदर** से आसानी से पाटा जा सकता है।



विवाह का उपयुक्त समय

अ ध्या य 6

विवाह का उपयुक्त समय

अभय जी और रिया जी की दशाओं को एक साथ देखें तो **जून 2027 के बाद का काल विवाह के लिए सबसे अनुकूल** दिखाई देता है — जब अभय जी की राहु महादशा समाप्त होकर गुरु महादशा आरंभ होगी।

अभय जी की दशा — एक बड़ा मोड़

अभी राहु-मंगल अंतर्दशा (जून 2026 से जून 2027) चल रही है। राहु और मंगल — दोनों ही अस्थिरता व भागदौड़ के कारक हैं। इस समय बड़े जीवन-निर्णय लेने में थोड़ी सावधानी उचित है। **जून 2027 से गुरु महादशा** आरंभ होगी — और गुरु अभय जी की कुंडली में लग्नेश होने के साथ-साथ उच्च राशि कर्क में विराजमान हैं। गुरु सप्तम भाव पर सीधी दृष्टि डालते हैं, जो विवाह का भाव है। यह महादशा विवाह, स्थिरता और गृहस्थ जीवन के लिए बहुत बल देती है। **विवाह का सबसे शुभ समय अक्टूबर 2027 से मार्च 2028 के बीच** बनता है — जब गुरु की महादशा पक जाएगी और गोचर में गुरु वृश्चिक या धनु राशि की ओर बढ़ रहे होंगे।

रिया जी की दशा — गुरु-चंद्र

रिया जी की गुरु महादशा में चंद्र अंतर्दशा (2014-2030 की महादशा) चल रही है। चंद्र उनके पंचम भाव में तुला राशि में हैं और गुरु भी उसी भाव में — यह विवाह व नए सम्बंध के लिए स्पष्ट संकेत है। **दोनों की दशाएँ 2027 के बाद एक साथ अनुकूल हो रही हैं** — यही सबसे महत्वपूर्ण बात है।

मुख्य बातें

- **जून 2027 से अभय जी की गुरु महादशा** विवाह का प्रबल काल खोलती है — गुरु लग्नेश हैं और सप्तम भाव देखते हैं
- रिया जी की गुरु-चंद्र अंतर्दशा भी इसी काल में अनुकूल है
- **अक्टूबर 2027 से मार्च 2028** — विवाह के लिए सर्वाधिक शुभ खिड़की
- अभी (राहु-मंगल में) जल्दबाजी से बचें; रिश्ता पक्का होने दें, विवाह थोड़ा ठहरकर करें
- दोनों परिवार निश्चित रहें — **यह जोड़ी सही समय पर मिली है**



निचोड़, सरल उपाय व शुभकामना — दोनों परिवारों के लिए

अ ध्या य 7

निचोड़, सरल उपाय व शुभकामना — दोनों परिवारों के लिए

अभय जी और रिया जी की यह जोड़ी 25.5 अंकों के साथ परंपरा में **उत्तम मिलान** की श्रेणी में आती है। नाड़ी और भूकूट — जो दो सबसे भारी दोष माने जाते हैं — दोनों यहाँ पूरी तरह अनुकूल हैं। ग्रह-मैत्री पूरे पाँच अंक लेकर बताती है कि इन दोनों के मन का तार एक-दूसरे से स्वाभाविक रूप से जुड़ता है।

जोड़ी का असली स्वभाव — क्या मिलता है, क्या सँभालना होगा

अभय जी का चंद्र मकर में है — स्थिर, व्यावहारिक और ज़िम्मेदारी से काम करने वाला स्वभाव। रिया जी का चंद्र तुला में है — संतुलन चाहने वाला, रिश्तों को सँजोने वाला और भावनाओं को बोलकर सुलझाने वाला। ये दोनों राशियाँ शनि और शुक्र की हैं — और **शनि-शुक्र की मित्रता इस जोड़ी की सबसे बड़ी ताक़त है**। इसीलिए ग्रह-मैत्री में पूरे पाँच अंक मिले।

गण-मिलान में अंतर है — अभय जी मनुष्य गण, रिया जी राक्षस गण — और यहाँ शून्य अंक हैं। इसका सीधा अर्थ यह नहीं कि रिश्ता कठिन होगा; इसका अर्थ है कि **दोनों का निर्णय लेने और भावनाएँ व्यक्त करने का तरीका अलग है**। रिया जी स्पष्ट और तीव्र होंगी, अभय जी धीरे और तोलकर चलने वाले। यह अंतर समझ लिया जाए तो झगड़ों का कारण नहीं बनता — बल्कि एक-दूसरे को पूरा करता है।

योनि मिलान में दो अंक हैं — नकुल और व्याघ्र। यह बताता है कि **शुरुआती वर्षों में तालमेल बनाने में थोड़ा समय और धैर्य चाहिए**

होगा। रोजमर्रा की आदतें, स्वभाव की गति — इनमें फ़र्क रहेगा, पर यह फ़र्क समय के साथ प्रेम में बदलता है।

मंगल का प्रश्न — डरने की नहीं, समझने की बात

रिया जी की कुंडली में मंगल दूसरे भाव (कर्क) में हैं — इसे मांगलिक स्थिति कहा जाता है। अभय जी की कुंडली में मंगल तीसरे भाव में हैं — यह मांगलिक नहीं। **परंपरा में जब एक मांगलिक हो और दूसरा नहीं, तो कुछ सावधानियाँ बताई जाती हैं — पर विवाह पर रोक नहीं।** इस जोड़ी में ग्रह-मैत्री इतनी अच्छी है कि यह संतुलन काफ़ी हद तक साध लेती है। बस यह ध्यान रहे कि बड़े निर्णयों में — विशेषकर घर, सम्पत्ति या परिवार से जुड़े मामलों में — जल्दबाज़ी से बचें, थोड़ा सोचकर चलें।

दशा का संकेत — विवाह का समय

अभय जी अभी **राहु महादशा-मंगल अंतर्दशा** में हैं, जो जून 2027 तक है। इसके बाद गुरु की महादशा आएगी — और गुरु उनकी कुंडली में पंचम भाव में उच्च के हैं। **जून 2027 के बाद का समय अभय जी के लिए नई शुरुआत, स्थिरता और गृहस्थ जीवन के लिए अत्यंत अनुकूल है।**

रिया जी **गुरु महादशा** में हैं, जो 2030 तक चलेगी। गुरु उनके पाँचवें भाव के स्वामी हैं — विवाह और नए रिश्तों के लिए यह दशा शुभ मानी जाती है। दोनों की दशाएँ मिलकर **2027 से 2029 का समय** इस विवाह के लिए सबसे उपयुक्त बताती हैं।

मुख्य बातें

- **25.5/36 — यह उत्तम मिलान है।** नाड़ी व भकूट दोनों अनुकूल; ग्रह-मैत्री पूरी।
- **ताक़त:** मन का स्वाभाविक तालमेल, व्यावहारिकता और भावनात्मक संतुलन का मेल।
- **ध्यान रखें:** गण-अंतर — दोनों की भावनाएँ व्यक्त करने की शैली अलग है; धैर्य और सुनने की आदत इस रिश्ते को गहरा करेगी।
- **विवाह का शुभ समय:** जून 2027 के बाद, विशेषकर 2027-2028।

सरल उपाय — दोनों के लिए, बिना किसी बोझ के

अभय जी के लिए:

गुरु उनकी कुंडली के सबसे बड़े ग्रह हैं — उच्च के, पंचम भाव में। **हर गुरु के दिन किसी एक को कुछ सिखाएँ या किसी ज़रूरतमंद की मदद करें** — यह गुरु को जगाने का सबसे सीधा रास्ता है। साथ ही, **रोज़ सुबह कम-से-कम 20 मिनट खुली हवा में चलें** — मंगल अंतर्दशा में शरीर को सक्रिय रखना ज़रूरी है।

रिया जी के लिए:

उनके पाँचवें भाव में गुरु, शुक्र, चंद्र, सूर्य और राहु — बहुत ऊर्जा एक जगह इकट्ठी है। **रोज़ थोड़ी देर — चाहे दस मिनट ही — एकांत में बैठें, मन को शांत करें।** कोई भी ध्यान, प्रार्थना या बस चुप्पी — यह उनके मन को सधाएगी।

दोनों के लिए मिलकर:

विवाह से पहले — और विवाह के बाद भी — **हर सप्ताह एक बार बिना फ़ोन के, सिर्फ़ एक-दूसरे से बात करने में आधा घंटा दें।** यह कोई बड़ा अनुष्ठान नहीं — पर यही दो लोगों को सचमुच पास लाता है।

दोनों परिवारों के लिए शुभकामना

अभय जी और रिया जी — यह जोड़ी शास्त्र और स्वभाव, दोनों से मेल खाती है। जहाँ थोड़ा अंतर है, वह एक-दूसरे को समृद्ध करने के लिए है — कमज़ोर करने के लिए नहीं।

दोनों परिवारों को मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ — यह रिश्ता सुख, समझ और स्नेह से भरा हो। अभय जी और रिया जी का जीवन साथ मिलकर वह बन सके जो अकेले नहीं बन सकता था। 🙏

॥ शास्त्र-प्रमाण ॥

यस्य यश्च यदा दुःस्थः स तं यत्नेन पूजयेत् ।

एषां धात्रा वरो दत्तः पूजिताः पूजयिष्यथ ॥

जिसका जो ग्रह पीड़ित हो, वह यत्नपूर्वक उसकी उपासना करे। ब्रह्मा ने ग्रहों को वर दिया है — "पूजित होकर तुम भी पूजक का मान रखोगे।"

— बृहत् पाराशर होरा शास्त्र, अध्याय ८४

△ यह परंपरागत अष्टकूट मिलान पर आधारित है। विवाह का निर्णय दोनों परिवारों की आपसी समझ, स्वभाव-मेल व सहमति से ही होना चाहिए — ज्योतिष उसमें केवल एक सहायक दृष्टि है।

॥ ॐ शुभम् ॥

❖ ParasVani · पारस वाणी ❖ विवाह मिलान की पूरी रिपोर्ट ❖ अभय शर्मा व रिया वर्मा (काल्पनिक) ❖

यह AI-सहायित वैदिक विश्लेषण मार्गदर्शन हेतु है — निर्णय अपने विवेक से लें।